सामाजिक मूल्य (Social Values)

❑ मूल्य का अर्थ व परिभाषाएँ :

मूल्य : एक अमूर्त समप्रत्यय है। इसका संबंध मनुष्य के भावात्मक पक्ष से होता है। जो कि उसके व्यवहार को नियंत्रित व निर्देशित करता है। जबकि दर्शनशास्त्र में 'मनुष्य के जीवन के प्रति दृष्टिकोण' को मूल्य की संज्ञा दी गई है। मूल्य मनुष्य के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निर्णय व चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मूल्य शब्द अग्रेंजी भाषा के वैल्यू (Value) शब्द से बना है जिसका लैटिन भाषा में अर्थ है योग्यता या महत्व। मूल्य वह है जो इच्छाओं और आवश्यकताओं की संतुष्टि करें।

- **पार्क के अनुसार**–मूल्य वह है जो इच्छित है जिसको पाने के लिए व्यक्ति व समाज चेष्टा करता है।
- **स्टेनली के अनुसार**–मूल्यों का निर्माण मनुष्य की रूचि द्वारा होता है अतः मूल्यों के अन्तर्गत मनुष्य द्वारा इच्छित वस्तु की परख तथा मूल्यांकन भी आता है।
- **अर्बन के अनुसार**–मूल्य वे हैं जो मानव इच्छा की पूर्ति करते हैं।
- **जॉन जे.कॉने के शब्दों में**–मूल्य–आदर्श/विश्वास या मानक है जो समाज के अधिकांश सदस्यों द्वारा ग्रहण किए हुए होते हैं।

इस प्रकार मूल्य एक प्रकार के मापदण्ड व व्यवहार के पैमाने होते हैं जिनके आधार पर समाज उचित अनुचित, अच्छा–बुरा, वांछित–अवांछित का निर्णय करते है और अपने सदस्यों के व्यवहार का मूल्यांकन करता है। इस प्रकार मूल्य व्यक्ति के हर कार्यों, व्यवहारों, विचारों के मापदण्ड होते हैं। यह मानव अस्तित्व के लिए अति महत्वपूर्ण है। वे मानक/धारणाएँ जिनके आधार पर हम किसी व्यक्ति के व्यवहार, गुण, लक्ष्य, भावना आदि को उचित या अनुचित ठहराते हैं, मूल्य कहलाते हैं। उदाहरण – ईमानदारी, न्याय, आजादी, जिम्मेदारी आदि।

❑ सामाजिक मूल्य :

सामाजिक मूल्य से अभिप्राय समाज में स्थापित मानदंडो के समुच्चय से है जिसका पालन समाज में एकरूपता लाने के लिए किया जाता है। यह मूल्य मानव के अधिकतम कल्याण के लिए समाज के मानक होते हैं, व्यक्ति एवं समाज दोनों के हित के लिए आवश्यक होते हैं। ये मूल्य सामाजीकरण की लंबी प्रक्रिया का परिणाम है। उदाहरण – मानवता, सदाचार, स्वतंत्रता, समानता, न्याय एवं बंधुत्व।

❑ सामाजिक मूल्य की परिभाषाएँ :

- **राधाकमल मुखर्जी के अनुसार–**

मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाएँ तथा लक्ष्य है जिनका आन्तरीकरण सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है और जो प्राकृतिक अधिमान्यताएँ, मानक तथा अभिलाषाएँ बन जाती है।

- **जॉनसन के अनुसार–**

मूल्यों को एक धारणा या मानक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो कि सांस्कृतिक हो सकता है या केवल व्यक्तिगत और जिसके द्वारा वस्तुओं की एक साथ तुलना की जाती है।

- **फिचर के अनुसार–**

समाजशास्त्रीय दृष्टि से मूल्यों को उन कसौटियों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसके द्वारा समूह या समाज व्यक्तियों, मानदण्डों, उद्देश्यों और अन्य सामाजिक सांस्कृतिक वस्तुओं का निर्णय करते हैं। इस प्रकार सामाजिक मूल्य साधन व साध्य दोनों है। मनुष्य सामाजिक मूल्यों को सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा विकसित करता है तथा उन्हीं के अनुसार आचरण करता है।

❑ मूल्य का महत्व :

मूल्यों के विकास द्वारा ही व्यक्ति व समाज का सर्वांगीण विकास संभव है। बिना मूल्य का जीवन निरर्थक होता है। मूल्य विहीन मनुष्य की तुलना पशु से की जा सकती है। **मूल्यों के महत्व अग्रलिखित है–**

1. व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक अर्थात् मूल्यों के द्वारा ही सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक मूल्यों का विकास होता है।
2. मानवता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते है। इससे विश्व शांति व बंधुत्व की भावना का विकास संभव है।
3. शिक्षा सुधार में मूल्यों का व्यापक महत्व है।
4. मूल्यों को विकसित कर जीवन स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है क्योंकि व्यक्ति की सोच व विचारधारा में बदलाव से ही सफलता संभव है। यह कार्य बिना मूल्यों के संभव नहीं है।
5. मूल्य समाज में एकरूपता लाकर व्यक्ति को व्यवस्थित, संगठित व सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
6. मूल्यों का वर्गीकरण मूल्य सामाजिक नियंत्रण के साधन होते हैं।

❑ मूल्यों के प्रकार :

- **आंतरिक मूल्य**–सत्य, करूणा, दया, सौन्दर्य, शुभ, सद्गुण आदि को आंतरिक मूल्य कहा जाता है। ये मूल्य मनुष्य को किसी न किसी रूप में संतुष्टि प्रदान करते हैं। इन्हें साध्यगत मूल्य भी कहा जाता है क्योंकि ये किसी वस्तु की प्राप्ति का साध्य है।

- **साध्य मूल्य**–मनुष्य की मानसिक अवस्थाएँ किसी अन्य वस्तु के साथ जुड़ी न होकर स्वयं ही शुभ और स्वतः साध्य होती है इन्हीं मूल्यों को साध्य मूल्य कहते हैं। ये मूल्य परिणाम सापेक्ष न होकर परिणाम निरपेक्ष होते हैं अर्थात् इन मूल्यों में परिणाम पर ध्यान न देकर उत्कृष्टता को प्राप्त किया जाता है।

- **साधन मूल्य** – वे मूल्य जो स्वतः साध्य न होकर किसी अन्य वस्तु के साधन के रूप में शुभ होते हैं। उन्हें साधन मूल्य, परत मूल्य, स्वतः मूल्य कहते हैं। वास्तव में यह परिणाम सापेक्ष होते हैं जो कि किसी साध्य की प्राप्ति हेतु साधन के रूप में आवश्यक माने जाते है। जैसे–बेहतर जीवन हेतु भोजन, वस्त्र व मकान आदि। मनुष्य भौतिक वस्तुओं के माध्यम से सुख की प्राप्ति कर सकता है। इसलिए वस्तुओं के मूल्य से संबंधित मूल्यों को साधन मूल्य कहा जाता है। ये आर्थिक व शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के कारण इन्हें आर्थिक मूल्य व शारीरिक मूल्य भी कहा जाता है।

- **नैतिक मूल्य** – किसी समाज के वे आदर्श होते हैं जिनकी प्राप्ति हेतु समाज के सभी सदस्यों द्वारा अपेक्षा की जाती है तथा यह सदस्यों के व्यवहारों को निर्देशित करें। ये नैतिकता पर आधारित मूल्य होते हैं जो मनुष्य में नैतिक आचार व व्यवहार का नियंत्रित व निर्देशित करते हैं। जैसे–सत्यनिष्ठा, करूणा, सहानुभूति, उत्तरदायित्व, कर्तव्यनिष्ठता इत्यादि।

- **सांस्कृतिक मूल्य** – इन मूल्यों की उत्पत्ति व्यक्ति के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में नियमितता और नियंत्रण के लिए हुई है। लोककला, रीति–रिवाज, नृत्य सभी सांस्कृतिक मूल्य कहे जाते हैं।

- **विशिष्ट मूल्य** – वे मूल्य जो किसी विशेष समूह, समुदाय या संगठन के लिए उपयोगी मानते हुए उनके द्वारा मान्य एवं स्वीकार्य होते हैं तथा उनके द्वारा विकसित किए जाते हैं जैसे–विश्नोई समाज द्वारा वन्यजीव संरक्षण का मूल्य, जैन धर्म का अहिंसा का मूल्य आदि।

- **सार्वभौम मूल्य** – वह मूल्य जो दुनिया के सभी समाजों के लिए समान रूप से उपयोगी माने जाते हैं एवं सबके द्वारा सार्वभौमिक रूप से मान्य होते हैं। जैसे–सत्य, अहिंसा, करूणा, ईमानदारी, न्याय आदि।ये देश, काल, परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित नहीं होते हैं। सभी देशों व मनुष्यों पर समान रूप से लागू होते हैं।

- **जैविक मूल्य** – जीव से संबंधित दैहिक, आर्थिक व मनोरंजन संबंधित मूल्य जो मानव जीवन की प्रथम अनिवार्यता है। ये मूल्य व्यक्ति की शरीर रक्षा के लिए निर्धारित किए जाते हैं। जैसे–शराब मत पीओ हिंसा मत करों आदि।

- **आध्यात्मिक मूल्य** – ये मूलतः साध्य मूल्य होते हैं जिनका संबंध आध्यात्म या आत्मा से होता है। यह आत्मा की परम आदर्श की स्थिति होती है जिसमें सत्यं, शिवम्, सुन्दरम् की अभिव्यक्ति द्वारा तृप्ति प्राप्त होती है। यह जीवन के अंतिम लक्ष्य की ओर ले जाते हैं।

❑ **सामाजिक मूल्य :**

सामाजिक मूल्य किसी भी समाज के प्रमुख घटक होते हैं। प्रत्येक समाज के अपने पृथक्–पृथक् मूल्य होते हैं अर्थात् एक ही तथ्य से संबंधित अलग–अलग समाजों के मूल्य भी अलग–अलग होते हैं। इनका संबंध समाज के सभी व्यक्तियों के समग्र मूल्य से होता है जो समाज के व्यवहार को विशेष रूप से प्रभावित करते हैं। ये मूल्य सामाजिक जीवन से संबंधित होते हैं।

❑ **सामाजिक मूल्य की विशेषताएँ :**

- सामाजिक मूल्य सामूहिक होते हैं। ये मूल्य व्यक्तिगत न होकर पूरे समाज से संबंधित होते हैं तथा इन्हें समाज द्वारा मान्यता भी प्राप्त होती है। सामाजिक मूल्य समाज के लक्ष्य एवं आदर्श होते हैं जिसकी प्राप्ति की अपेक्षा समाज अपने सभी सदस्यों से करता है। सामाजिक मूल्य आदर्शात्मक रूप में 'क्या होना चाहिए' पर बल देता है जो जीवन के लक्ष्यों व उद्देश्यों को प्राप्त करने के साधनों को स्पष्ट करता है।
- सामाजिक मूल्यों में गतिशीलता का गुण पाया जाता है अर्थात् ये सदैव समान न होकर समय व परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तित होते रहते हैं। उदाहरण – सती प्रथा भारत में पहले एक मूल्य के रूप में स्थापित थी किंतु आज इसकी आलोचना होती है तथा यह पूर्णतः वर्जित है।
- सामाजिक मूल्यों का संबंध भावनाओं व उद्वेगों से होता है। लोगों की भावनाओं से जुड़े होने के कारण व्यक्ति, व्यक्तिगत हितों पर सामाजिक मूल्यों को प्राथमिकता देता है।
- सामाजिक मूल्यों में एकरूपता का अभाव पाया जाता है। प्रत्येक समाज के अपने मूल्य होते हैं जो दूसरे समाज से भिन्न होते हैं जैसे–भारतीय समाज व पश्चिमी समाज के मूल्यों में भिन्नता दिखाई देती है।
- सामाजिक मूल्य अलिखित होते हैं क्योंकि इनका निर्माण समस्त समाज की भागीदारी से होता है। जिसके पीछे लम्बे समय तक चलने वाली सामाजिक क्रिया है अतः इनका लिखित रूप में पाया जाना कठिन है

❍ सामाजिक मूल्यों का महत्व :

1. सामाजिक मूल्यों में गतिशीलता के कारण समाज की प्रगति में सहायक।
2. समाज में स्थापित व्यवस्था को बनाये रखने में उपयोगी।
3. सामाजिक संबंधों एवं व्यवहार में एकरूपता के द्वारा समाज में समानता लाते हैं।
4. सामाजिक क्षमता का मूल्यांकन सामाजिक मूल्यों के आधार पर ही किया जा सकता है।
5. समाज के आदर्श विचारों व व्यवहारों के प्रतीक के रूप में सामाजिक मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि उनको सामाजिक स्वीकृति व मान्यता प्राप्त होती है।
6. सामाजिक मूल्य सामाजिक नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
7. भौतिक संस्कृति का महत्व बढ़ाने में उपयोगी–समाज में प्रतिष्ठा बढ़ाने हेतु कई भौतिक वस्तुओं जैसे–कार, मोबाइल आदि का उपयोग बढ़ता जा रहा है जो भौतिकवादी संस्कृति का पर्याय बन रहा है।
8. सामाजिक मूल्यों के आधार पर ही सामाजिक क्रियाओं एवं कार्यकलापों का ज्ञान होता है।

❑ वर्तमान भारतीय समाज के मूल्य :

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नवीन संविधान की रचना के फलस्वरूप नवीन मूल्यों का विकास हुआ। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में न्याय (सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक), स्वतंत्रता, समता व बंधुत्व को लोकतांत्रिक धर्मनिरपेक्ष समाजवादी गणराज्य व्यवस्था के आधार पर मूल्यों की श्रेणी में माना गया है जिनकी विवेचना निम्न प्रकार से की जा सकती है–

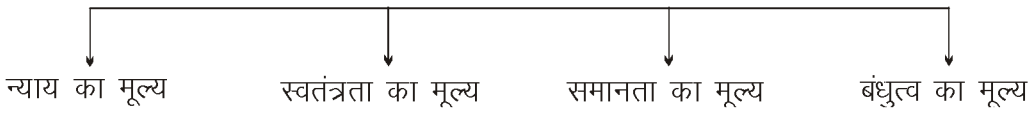

- भारतीय सामाजिक मूल्य को प्रभावित करने वाले विचारकों जिन्होनें समाज में भेदभाव को दूर करने, जातिगत ऊँच–नीच का विरोध करके सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन पर बल दिया। इन्होनें सामाजिक समानता, बंधुत्व, नैतिक शुद्धता को सामाजिक मूल्य के रूप में स्थापित किया।

❍ सामाजिक मूल्यों को प्रभावित करने वाले कुछ प्रमुख व्यक्तित्व एवं उनकी विचारधारा :

❑ सूरदास–

सूरदास ने जातिप्रथा का विरोध करते हुए सामाजिक समानता पर बल दिया है। इन्होनें एकता, सहिष्णुता को मूल्य के रूप में स्थापित कर समाज को नई दिशा प्रदान की।

❑ राजा राममोहन राय–

इन्हें भारतीय पुनर्जागरण का जनक तथा भारत में सामाजिक व राजनीतिक आंदोलनों का अग्रदूत कहा गया है। इन्होनें भारतीय सामाजिक व्यवस्था में सतीप्रथा, बाल विवाह, बहु विवाह, मूर्तिपूजा का विरोध किया तथा महिला अधिकारों, सामाजिक समानता, शिक्षा के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास सामाजिक मूल्यों के रूप में किया। इनके द्वारा धार्मिक एकता और मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रबल समर्थन किया गया।

❑ स्वामी विवेकानंद–

ये भारतीय सामाजिक व्यवस्था के ज्योति पूंज कहे जाते हैं। इन्होनें हिन्दूधर्म की मानवतावादी व्याख्या कर सामाजिक मूल्यों के विकास से युवाओं के चरित्र निर्माण पर बल दिया। इनके सामाजिक विचारों में अस्पृश्यता का विरोध, नारी समानता, बाल विवाह का विरोध, दलितोत्थान आदि पर विशेष ध्यान देते हुए व्यक्ति को अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन को प्रोत्साहित किया। युवा वर्ग के चरित्र निर्माण हेतु महत्वपूर्ण सूत्र प्रदान किया जिसमें आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास, आत्मसंयम, आत्मज्ञान और आत्मत्याग शामिल है।

❑ ज्योतिबा राव फूले–

ये एक क्रांतिकारी समाज सुधारक थे। इन्होनें सामाजिक समानता हेतु महिला व दलितोत्थान को आवश्यक माना और इसके साधन के रूप में शिक्षा पर बल दिया। समाज पर कुछ जातियों के एकाधिकार व जातीय वर्चस्व को खत्म करने हेतु अनेक प्रयास किए।

❑ सावित्री बाई फूले–

ज्योतिबा राव फूले की पत्नी सावित्री बाई फूले एक महिला सुधारिका विचारक थीं जिन्होनें स्त्री अधिकारो, लैंगिक समानता के लिए शिक्षा का पुरजोर समर्थन किया। इन्होनें समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त कर नारियों को समाज में सम्मानजनक व न्यायपूर्ण स्थान दिलाने हेतु प्रयास किए।

❑ **एम.जी. रानाडे –**

इन्होंने महिला सुधार व विधवा विवाह के समर्थन का प्रयास किया। इनके द्वारा ''वैदिक ऑथॉरिटीज फॉर विडो मैरिज'' में विधवा विवाह के लिए शास्त्रीय स्वीकृति का विवेचन किया गया।

❑ **मोहनदास करमचंद गाँधी –**

गाँधीजी ने सत्य, अहिंसा, प्रेम जैसे मानवीय मूल्यों को सामाजिक मूल्यों के रूप में स्थापित करने हेतु सशक्त प्रयास किये। इन्होंने हिंदु–मुस्लिम एकता तथा धार्मिक सद्भाव एवं सहिष्णुता को सामाजिक मान्यता प्रदान करने हेतु सराहनीय प्रयास किया।

❑ **सामाजिक मूल्य तथा मानवीय मूल्य में अंतर :**

क्र.सं.	आधार	सामाजिक मूल्य	मानवीय मूल्य
1.	प्रकृति	सामूहिक (समूह या समाज विशेष से संबद्ध)।	व्यक्तिगत (मानव से संबंधित)।
2.	स्वीकार्यता	सर्वसम्मति से समाज द्वारा स्वीकृतं।	यह मूल्य सार्वभौमिक हैं जो समान रूप से सभी मनुष्यों के लिए महत्व रखते हैं।
3.	प्रभाविता	समाज प्रभावित।	व्यक्ति विशेष प्रभावित।
4.	विस्तार	इसका दायरा व्यापक।	सीमित दायरा (मानवीय मूल्य सामाजिक मूल्यों का भाग हो सकते हैं।)
5.	उदाहरण	मानवाधिकार, न्याय, स्वतंत्रता, समानता, समान अवसर, निजता, सहिष्णुता, पर्यावरणीय नैतिकता एवं लोकदायित्व इत्यादि।	सदाचरण, स्नेह, सत्य, प्रेम, प्रशंसा, स्वीकृति, सम्मान, शांति,सहानुभूति इत्यादि।

❑ **वर्तमान में प्रचलित सामाजिक मूल्य तथा उनकी प्रासंगिकता :**

सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन में परस्पर सहसंबद्ध होते हैं तथा एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। आर्थिक विकास सामाजिक परिवर्तन को बल प्रदान करता है जिससे सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन परिलक्षित होता है। परिवर्तन समाज पर अनुकूल एवं प्रतिकूल दोनों प्रकार से प्रभाव डालते है।

अनुकूल :– समाज की गतिशीलता बढ़ाने व सामाजिक प्रगति में सहायक।

प्रतिकूल :– सामाजिक संबंधों एवं व्यवस्था में बाधक।

- मूल भारतीय सामाजिक मूल्यों में संयुक्त परिवार एवं सामूहिकता को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था जो वर्तमान परिदृश्य में क्षीण होता जा रहा है। आर्थिक विकास प्रक्रिया में व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं व स्वतंत्रता तथा एकल परिवारों को वरीयता दी जाने लगी जिसका नकारात्मक परिणाम सामूहिकता एवं ढीले पड़ते सामाजिक संबंधों के रूप में देखा जा सकता है।

- परंपरानुसार अंतर्जातीय, अंतधार्मिक प्रेम विवाहों को पर्याप्त स्वीकृति प्राप्त नहीं थी वहीं वर्तमान में इनका प्रचलन बढ़ा है।
- भारतीय मूल्यों में नारियों को उच्च स्थान प्राप्त रहा है – ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र देवता रमन्ते'' तथा ''अतिथि देवो भवः'' की भावना विद्यमान रही लेकिन वर्तमान परिदृश्य में ऐसे मूल्यों में ह्रास होता दिखाई दे रहा है।

❑ **सामाजिक मूल्यों की निरंतरता को बनाए रखने हेतु किये जाने वाले प्रयास :–**

- पश्चिमी/पाश्चात्य संस्कृति के साथ भारतीय संस्कृति व मूल्यों को शामिल करते हुए आगे बढ़ने का प्रयास करना।
- व्यावसायिक शिक्षा के साथ–साथ नैतिक शिक्षा को बढ़ावा देना।
- भारतीय दर्शन व ग्रंथो यथा–वेद, उपनिषद, गीता, रामायण इत्यादि की महत्ता को जनता के समक्ष प्रस्तुत करना।
- भौतिक संसाधनों की पर्याप्त आपूर्ति।